व्याख्यान - 5 (प्रतिष्ठा)

Page No.
Date: / /

स्नातक प्रथम खण्ड

अतीत (कथा संग्रह)

'जयन्ती' कथाक समीक्षा करू।

ई कथा सर्वप्रथम 'वैदेही' के मई 1960क अंक मे प्रकाशित भेल। एहि कथा मे बाल विधवाक नैराश्यपूर्ण जीवनक वर्णन भेल अछि।

मिथिला मे वैवाहिक समस्या विशेषः बाल विवाहक समस्या पर लिखल कथाक परम्परा मे एहि कथाक विशेष महत्व अछि। एहिमे कथाकार द्वारा बाल विवाहक कारण आ ओहि सँ उत्पन्न समस्या के अभिव्यक्त कएल गेल अछि। कथा नायिका जयन्ती ओहि अवस्था मे विधवा भऽ जाइत अछि जखन ओकरा जीवनक वास्तविक तथ्यक कोनो ज्ञान नहि रहैत अछि। कथाकार कहैत छथि – " जयन्तीक सोहाग केवल दू वसन्त देखलनि। दू बहुत छोट वसन्त। तकरा बाद रास भवाहिनीक कोप। एक दिन जयन्तीक चूड़ी फोड़ि देल गेलनि। हुनक सिन्दूर पोछि देल गेलनि। ओहि दिन ओ कानल अवश्य रहथि मुदा ओहि अवसरक गुरुताक पूर्ण भान हुनका नहि भेल रहनि " (कथा संग्रह सँ)

कथाकारक दृष्टिकोण मे सामाजिक बन्धन सँ बन्हाएल मनुष्य चाहियो कऽ ओकरा सँ बाहर नहि जा सकैत अछि। एहि प्रसंग कथाकारक मंतव्यके प्रमाणिक मानी तऽ सामाजिक बन्धनक ई विशेषता होइत छैक जे जा धरि ओहि पर बल नहि पड़ैक, जा धरि जानि बुझि कऽ ओकर

अस्तित्वक ज्ञान नहि होइत छैक। सामाजिक परिधि लक्ष्मण रेखा जकाँ शक्तिशाली परन्तु ओहू सँ सूक्ष्म होइत अछि। एकरा केओ देखि नहि सकैत अछि, मुदा ओहि क्रमण करबाक प्रयास करितहि तकर अस्तित्व ज्ञान भऽ जाइत छैक।

तत्कालीन मिथिलामे एहि प्रकारक सामाजिक कुव्यवस्थाक मुख्य कारण छल स्त्रीमे शिक्षाक कमी आ एहि कमीक कारण छल परिवारक कुत्सित मानसिकता। स्त्रीकेँ मात्र व्यावहारिक ओ पारिवारिक गुण सिखाओल जाइत छल। कथाक एकमात्र पात्र, जे नायिकाक रूपमे उद्धृत अछि, केँ सभ गुण तऽ छल मुदा पोथिक ज्ञान नहि छल। कथामे एहि सभ तथ्यकेँ निम्न रूपेँ राखल गेल अछि — "जयन्ती केँ शिक्षा भेटल रहैन केवल आगामी काजक। मानस ओ नीक करथि, हुनक टकुरीक सूत सँ मेँही टोपक मे ककरो स्तर नहि होइक, चुरचुर लिखबामे ओ पटु, मुदा पोथी-पत्रासँ कोनो सरोकार नहि। कारी अक्षर हुनका हेतु भैंस बराबरि। हुनक अभिभावक कहथि जे अक्षरक ज्ञान सँ मौगी व्याभिचारिणी भऽ जायत, पर-पुरुषकेँ पत्र लिखत आदि।"

एवं प्रकारेँ देखल जाए तऽ तत्कालीन परिवेशमे समाजक विकृत मानसिकताक कारणेँ स्त्री पछुआएल छलीह।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय
राजनगर, मधुबनी।